आपातकाल में सृजन फुलवारी

आदित्य राजौरिया 'अजनबी'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

आदित्य राजौरिया "अजनबी"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-189-3

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, आदित्य राजौरिया

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ADITYA RAJORIYA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	संसार का आधार	6
2.	मूल जड़ें	7
3.	देश का हाल	8-9
4.	प्यार कि शुरुआत	10-11
5.	वर्तमान स्थिति	12
6.	विरह वेदना	13
7.	पूंछते हैं राम जी	14
8.	सूरज की औकात नहीं	15
9.	गज़ल-1	16
10.	गज़ल-2	16
11.	गज़ल-3	17
12.	गज़ल-4	18
13.	गज़ल-5	19
14.	गज़ल-6	19
15.	गज़ल-7	20
16.	गज़ल-8	20
17.	"माँ पभु जी की कृपादृष्टि है"	21

संसार का आधार

मेरे मन के वासी आजा, मन में तेरा प्यार पले।
तुझसे ही है दुनिया सारी, तुझसे ही संसार चले।

तुझसे मेरा जीवन रोशन, तू जीने की चाह बना।
अँधियारी इन गलियों में तू, आकर मेरी राह बना।
मैंने समझा राज तुम्हारा, जाने सबके सार भले।
तुमसे ही है दुनिया सारी, तुमसे ही संसार चले।

मेरे मन के वासी आजा, मन में तेरा प्यार पले।
तुझसे ही है दुनिया सारी, तुझसे ही संसार चले।

जीवन की परछाई बनकर, संग सदा ही रहना है।
बिनु तेरे पलभर ना जीना, मेरे मन का कहना है।
सारी दुनिया को ही मेरी, जीने की पतवार खले।
तुझसे ही है दुनिया सारी, तुझसे ही संसार चले।

मेरे मन के वासी आजा, मन में तेरा प्यार पले।
तुझसे ही है दुनिया सारी, तुझसे ही संसार चले।

मन मोहक ये छटा तुम्हारी, दिल दीवाना कर देती।
नीरस से मेरे जीवन में, रोचकता को भर देती।
नदियां बन के मिल जाऊं में, सागर वाली धार तले।
तुझसे ही है दुनिया सारी, तुझसे ही संसार चले।

मेरे मन के वासी आजा, मन में तेरा प्यार पले।
तुझसे ही है दुनिया सारी, तुझसे ही संसार चले।

मूल जड़ें

चंदा दागी हुआ दिखे है, मैली सूरज की लाली।
गिरधारी अब ना आयेंगें, आस छोड़ दो पांचाली।

कच्ची कलियाँ तोड़ सभी जन, मिटा रहे हैं बागों को।
बदनामी का दंश दिया है, रिश्ते वाले धागों को।
मान और सम्मान सभी का, अब पैसे से नीत हुआ।
अपराधी के बढ़े हौंसले, कब किंचित भयभीत हुआ।
कैसे उपवन बच पायेगा, रौंद रहे हैं जब माली।
गिरधारी अब ना आयेंगें, आस छोड़ दो पांचाली।

सूखी नदियां ताल तलैया, कुआ बाबड़ी सूखे हैं।
झूँठी शान बनाने खातिर, हम पेड़ो के भूखे हैं।
रीत रिवाज भूलकर अपने, गैरों के अपनाये हैं।
पहले तन से करी गुलामी, अब मन को भटकाये हैं।
निज कर्मो से मिटा रहे हैं, खुद जीवन की हरियाली।
गिरधारी अब ना आयेंगें, आस छोड़ दो पांचाली।

जात धर्म की बातें करते, राष्ट्र धर्म को भूल गये।
खुद की ही पहचान मिटा दी, सुविधाओं में झूल गये।
भाई भाई का रहा नहीं अब, भाव ताव का मोल हुआ।
कौड़ी कौड़ी बिकने वाला, आज वही अनमोल हुआ।
लेकिन इससे खोती दिखती, है भारत की खुशहाली।
गिरधारी अब ना आयेंगें, आस छोड़ दो पांचाली।

देश का हाल

नेता सारे मस्त हुए हैं, उलझे हैं सरकारों में।
राजनीत की शाख गिरी है, सत्ता के गलियारों में।

रामायण को भूल गये हम, गीता आज पराई है।
अनजानी सी लगती हमको, दोहा वा चौपाई है।
आडंबर के खेल रचाते, खूब दिखावा करते हैं।
परमपिता परमेश्वर से हम, खूब छलावा करते है।
तम्बू में भगवान बिठाकर, व्यस्त हुये मीनारों में।
राजनीत की शाख गिरी है, सत्ता के गलियारों में।

सत्य सनातन की परिभाषा, हमने खंडित कर डाली।
पाश्चात्य सभ्यता कुछ ऐसे, महिमा मंडित कर डाली।
वेदों और पुराणों वाली, सारी बातें भूल गये।
हुये आधुनिक दिल दिमाग से, और उसी में झूल गये।
फूहड़ता ही बिकती देखो, भीड़ भरे बाजारों में।
राजनीत की शाख गिरी है, सत्ता के गलियारों में।

संस्कार की सीढ़ी तोड़ी, मर्यादा को मारा है।
नंगे और उघारे रहना, फैशन हुआ हमारा है।
महापुरुष अब याद नहीं हैं, लोफरवाजी जारी है।
आजादी के दीवानों पर, संजू पिक्चर भारी है।
याद शहीद रहे हैं केवल, मंचो वाले नारों में।
राजनीत की शाख गिरी है, सत्ता के गलियारों में।

दुखी दामिनी चीख रही है, लोग हुए सब बहरे हैं।
शैतानों का बढ़ा हौसला, मानवता पर पहरे हैं।
अत्याचार बढ़े नारी पर, दानवता का शोर बड़ा।
सच्चा आज जेल में बैठा, सीना ताने चोर खड़ा।
सरे आम अब चीर खींचते, गलियों वा चौबारों में।
राजनीत की शाख गिरी है, सत्ता के गलियारों में।

भूखा ही मजदूर खड़ा है, दिखे किसान यहाँ प्यासा।
सपने सारे ध्वस्त हो गए, टूट रही है हर आशा।
जातिवाद में बटे भयंकर, देवों का अपमान करें।
कैसे होगा भला देश का, जब खुद का गुणगान करें।
धर्म और ईमान यहाँ पर, गिरवी हैं दरवारों में।
राजनीत की शाख गिरी है, सत्ता के गलियारों में।

बालक मन अपराधी होता, कैसे खेल दिखाता है।
बड़ो बड़ों सँग अपना यारों, पूरा मेल मिलाता है।
क्रूर हो गई पीढ़ी सारी, बचपन खोया खोया है।
आँख मूंदकर बैठे सारे, जग भी सोया सोया है।
जरा लोभ में शामिल होता, दिखता है गद्दारों में।
राजनीत की शाख गिरी है, सत्ता के गलियारों में।

प्यार कि शुरुआत

मन के हर कौने में उलझन, अनचाही आकुलता है।
रोम रोम रोमांचित मेरा, प्रेम भरी व्याकुलता है।

ऋतुयें सारी लगें बसंती, धूप छाँव का भेद नहीं।
पल में मुस्की पल में आँसू, इसका कोई खेद नहीं।
सुबह सुबह की नई आस में, रातों वाली नींद उड़ी।
दिन छोटे लगते हैं मुझको, रातें लगतीं बहुत बड़ी।
गुस्सा भी काफूर हुआ है, मन में बस कोमलता है।
रोम रोम रोमांचित मेरा, प्रेम भरी व्याकुलता है।

मन के हर कौने में उलझन, अनचाही आकुलता है।
रोम रोम रोमांचित मेरा, प्रेम भरी व्याकुलता है।

बिना जगाये जाग गया में, देख मुझे हैरान हुई।
बेचैनी मेरी जो देखी, माँ खूब परेशान हुई।
झट पट से तैयार हुआ में, अपनी शाला जाने को।
जल्दीवाजी में भूल गया जब, खाना अपना लाने को।
उसने जो बाँटा खाना वो, छुपी हुई निश्छलता है।
रोम रोम रोमांचित मेरा, प्रेम भरी व्याकुलता है।

मन के हर कौने में उलझन, अनचाही आकुलता है।
रोम रोम रोमांचित मेरा, प्रेम भरी व्याकुलता है।

स्वपन सजीले आँखों में हैं, उसकी छवि को संग लिये।
बदला सा व्यवहार हमारा, दोस्त यार सब दंग किये।
नव नूतन मन नव प्रसून सा, रोज प्रफुल्लित रहता है।
खुद से खुद की बातें करता, खुद से ही कुछ कहता है।
प्रथम प्रेम अहसास करे यह, मन मोहक निर्मलता है।
रोम रोम रोमांचित मेरा, प्रेम भरी व्याकुलता है।

मन के हर कौने में उलझन, अनचाही आकुलता है।
रोम रोम रोमांचित मेरा, प्रेम भरी व्याकुलता है।

वो लिखना और मिटाना मेरा, शब्दों का गुम हो जाना।
नजरों से नजरें मिल जायें, हँसकर गुमसुम हो जाना।
पुस्तक में उसकी चुपके से,चिट्ठी खाली रख देना।
गर पूँछे वो आकर हमसे, मन ही मन में हँस लेना।
बिना लाभ और हानि वाली, पावन सी चंचलता है।
रोम रोम रोमांचित मेरा, प्रेम भरी व्याकुलता है।

मन के हर कौने में उलझन, अनचाही आकुलता है।
रोम रोम रोमांचित मेरा, प्रेम भरी व्याकुलता है।

वर्तमान स्थिति

सच्चाई भी आज मरी है, झूँठा खेल तमाशा है।
जिससे जितनी आस लगाई, उसने तोड़ी आशा है।

रूखी सूखी मिलना भी तो, देखो मुश्किल यार हुआ।
लूट खसोट मचाने वाला, सारा ही बाजार हुआ।
जो भी सच का पालक बनता, वो पागल कहलाता है।
झूँठा और फरेबी हरदम, हर पल मौज उड़ाता है।
वो ही मंजिल पाता जिसकी, जितनी झूँठी भाषा है।
जिससे जितनी आस लगाई, उसने तोड़ी आशा है।

सच्चाई भी आज मरी है, झूँठा खेल तमाशा है।
जिससे जितनी आस लगाई, उसने तोड़ी आशा है।

रिश्तों पर भी धुँध छाई है, अब दिखता विश्वास नहीं।
खुद का ही दुख जाने सबजन, गैरों का अहसास नहीं।
फूलों की बगिया है घायल, कांटों वाले बाग हुये।
सबकी अपनी अपनी ढपली, अपने अपने राग हुये।
बदली बदली सी दिखती अब, जीवन की परिभाषा है।
जिससे जितनी आस लगाई, उसने तोड़ी आशा है।

सच्चाई भी आज मरी है, झूँठा खेल तमाशा है।
जिससे जितनी आस लगाई, उसने तोड़ी आशा है।

नन्हीं चिड़िया घायल होती, मृत दिखती है मानवता।
गिद्धों सम व्यवहार हुआ है, हावी है बस दानवता।
जिनको रक्षा भार मिला है, वो भक्षक बन बैठे हैं।
आस्तीनों में छुपने वाले, वो तक्षक बन बैठे है।
धीरे धीरे होता जाता, सबका आज खुलासा है।
जिससे जितनी आस लगाई, उसने तोड़ी आशा है।

सच्चाई भी आज मरी है, झूँठा खेल तमाशा है।
जिससे जितनी आस लगाई, उसने तोड़ी आशा है।

विरह वेदना

हलचल है मन के कोनों में, धड़कन राग सुनाती है।
विरह वेदना दिल की मुझको, नित नित ही तड़पाती है।

अलसायी सी भोर लगे है, खोई शाम सुहानी है।
जीवन में नव गीत न दिखते, केवल आज कहानी है।
याद सनम की कुछ ऐसे ही, मुझको रोज सताती है।
विरह वेदना दिल की मुझको, नित नित ही तड़पाती है।

हलचल है मन के कोनों में, धड़कन राग सुनाती है।
विरह वेदना दिल की मुझको, नित नित ही तड़पाती है।

पनघट से पनिहारी कोई, जैसे रूठ गयी हो जब।
युवा दिलों की आशा सारी, पल में टूट गयी हो तब।
एक गगरिया पानी वाली, कितना बोझ बताती है।
विरह वेदना दिल की मुझको, नित नित ही तड़पाती है।

हलचल है मन के कोनों में, धड़कन राग सुनाती है।
विरह वेदना दिल की मुझको, नित नित ही तड़पाती है।

बागों की वो कलियाँ सारी, मुरझाई सी लगतीं हैं।
सखी सहेली उसकी यारों, देख मुझे जब हँसतीं हैं।
दुनियाँ की ये दुनियाँदारी, घायल मन कर जाती है।
विरह वेदना दिल की मुझको, नित नित ही तड़पाती है।

पूंछते हैं राम जी

चौदह का वनवास हुआ था, मुझको त्रेता वाले युग में।
तुमने जाने कितने सालों, मुझको यूँ संकट में डाला।

केवल भगवन कहते रहते, पर देखी मेरी पीर नहीं।
घर से बेघर किया मुझे तब, क्यों सारे हुये अधीर नहीं।
तुम सब साथ रहे होते तो, होता ना ये गड़बड़ झाला।
तुमने जाने कितने सालों, मुझको यूँ संकट में डाला।

राज लोभ में दूर रहे कुछ, मूल कर्म को भूल गये थे।
सत्य सनातन की परिपाटी, मूल धर्म को भूल गये थे।
जानबूझ लगवाया तुमने, भारत में मकड़ी का जाला।
तुमने जाने कितने सालों, मुझको यूँ संकट में डाला।

दिनभर तो में रहूँ ओरछा, सब अच्छे अच्छे से बीते।
रात हुयी तम्बू में आकर, लगते थे क्षण रीते रीते।
वचन लिया कुअंरि गणेश ने, बनके रहता उनका लाला।
तुमने जाने कितने सालों, मुझको यूँ संकट में डाला।

राम राम से सुबह तुम्हारी, राम नाम से ही शाम हुई।
कारण क्या जो सकल विश्व में, मेरी नगरी बदनाम हुई।
कभी खुला तो कभी लगाया, मेरे घर पर तुमने ताला।
तुमने जाने कितने सालों, मुझको यूँ संकट में डाला।

सूरज की औकात नहीं

चंदा और चकोरी जैसी, रिश्तों में वो बात नहीं।
जुगनू मन में सोच रहे हैं, सूरज की औकात नहीं।

मर्यादा का शील भंग है, अब तेरह का तीन रहा।
अपने हक का खाकर देखो, हक दूजे का छीन रहा।
भाव भावना मरी पड़ी है, दिल में भी जज्वात नहीं।
जुगनू मन में सोच रहे हैं, सूरज की औकात नहीं।

चंदा और चकोरी जैसी, रिश्तों में वो बात नहीं।
जुगनू मन में सोच रहे हैं, सूरज की औकात नहीं।

मोर पपीहा रूठे बैठे, जंगल में है सूनापन।
शेर अकेला बैठा सोचे, कैसा ये मेरा जीवन।
जतन कई कर डाले हमने, कटती पर ये रात नहीं।
जुगनू मन में सोच रहे हैं, सूरज की औकात नहीं।

चंदा और चकोरी जैसी, रिश्तों में वो बात नहीं।
जुगनू मन में सोच रहे हैं, सूरज की औकात नहीं।

मानवता मृत प्राय हो गयी, धर्म और ईमान कहाँ।
नीयत बोल सभी के बिगड़े, रहा किसी का मान कहाँ।
दूर खड़े सब कहते दिखते, एक हमारी जात नहीं।
जुगनू मन में सोच रहे हैं, सूरज की औकात नहीं।

चंदा और चकोरी जैसी, रिश्तों में वो बात नहीं।
जुगनू मन में सोच रहे हैं, सूरज की औकात नहीं।

गज़ल

बात कुछ आज हमसे छुपाई गई।
पूँछने पर न हमको बताई गई।1।

जिन्दगी भर दिया साथ सच का यहाँ,
झूँठ की तोहमत क्यों लगाई गई।2।

गोद जिसने उठाये रखा था हमें,
आज वो माँ जमीं पर सुलाई गई।3।

बात इतनी समझ क्यों न आई हमें,
रीत फिर से पुरानी निभाई गई।4।

झूँठ बाहर खड़ा मुस्कुराता रहा,
और सच को' फाँसी दिलाई गई।5।

देखिये आप आकर यहाँ भी जरा,
वे वजह क्यों गरीबी सताई गई।6।

गज़ल

बस जरा देखिये आप अब तो।
लग रहा है किसे पाप अब तो।

नौचते जिस्म जो औरतों का।
वो करें आजकल जाप अब तो।

लुट रहीं बेटियां भी यहाँ पर।
देवियाँ दें नहीं शाप अब तो।

मिट गये दौर इंसानियत के।
लूट अस्मत रहे बाप अब तो।

भूल कर आज वो राज अपना।
खोलते दूसरी छाप अब तो।

अजनबी हर तरफ है तबाही।
बेचकर बैठते ताप अब तो।

गज़ल

आज भी उसकी मुझे तो याद है।
होंठ हैं खामोश पर फ़रियाद है।1।

सिलसिला यह आँसुओं वाला यहाँ।
रुक नहीं सकता सदा आबाद है।2।

बात इतनी सी समझ आती नहीं।
इश्क में होता जहाँ बरबाद है।3।

हों अगर खामोश लव तो जानिये।
आँख का फिर आँख से संवाद है।4।

आदमी से आदमी डरने लगा।
बेवजह का धार्मिक उन्माद है।5।

अजनबी हालात बिगड़े देश के।
किस तरह के शंख का यह नाद है।6।

गज़ल

दया धर्म जीवन में रख।
मोह नहीं तू धन में रख।

कृष्ण बिना सब सूना है।
कान्हा वृन्दावन में रख।

तुलसी औषधि जीवन की।
इसे सदा आँगन में रख।

बुरे विचारों वाले सुन।
पैर नहीं मधुवन में रख।

सोच भला तू दुनिया का।
मन की बातें मन में रख।

चाह तुझे गर कान्हा की।
प्रेम सदा माखन में रख।

दरश मिलेंगे तुझको भी।
चाह सदा आँखन में रख।

कृष्ण मुरारी आते हैं।
झूला तू सावन में रख।

प्रेम सफल हो जायेगा।
प्रीत सदा पावन में रख।

गज़ल

हर कहीं मिलती नहीं वो छाँव होते हैं पिता।
बालपन में तो हमारे पाँव होते हैं पिता।1।

रूठ कर अक्सर यहाँ हम बैठ जाते देखिये।
हम समझ पाते नहीं वो भाव होते हैं पिता।2।

जीतता जब देखते हमको सदा वो झूमते।
जीत पर खुद ही लगें वो दाव होते है पिता।3।

बात इतनी सी हमें यह तो समझनी चाहिए।
जिन्दगी जिससे सफल वो नाव होते हैं पिता।4।

आज के इस आधुनिक युग को जरा समझाइये।
क्यों बूढ़े इनके लिए अब घाव होते हैं पिता।5।

ये जरा सी बात हमको क्यों समझ आती नहीं।
चाहते हमको सुखी वो ख्वाव होते हैं पिता।6।

गज़ल

मरें वो भूँख से ही जो जहाँ को आज पाले हैं।
किसानों के लिये ही जान के अब आज लाले हैं।1।

उगाये जो फसल सारी यहाँ उसको नहीं हासिल।
बजारों में लुटेरों से छिना बैठे निवाले हैं।2।

गरीबी शाप बन कर के यहाँ देखो सताती है।
सहेजें पाँव जो सबके हुये उन पाँव छाले हैं।3।

बड़ी मुस्किल हुई देखो बदन भूँखे उघारे हैं।
पड़े ये आज किस्मत पर सियासतदार ताले हैं।4।

लड़ें हम खूब आपस में इरादा वो रखें ऐसा।
बना कर वो यहाँ बैठे नये कुछ आज जाले हैं।5।

सिके रोटी सियासत की यही वो चाहते हैं बस।
लिबासों में सफेदी और सारे काम काले हैं।6।

गज़ल

झुकाकर के नजर को आज मुँह को मोड़ आये हैं।
कमाने चार पैसे आज रिश्ता तोड़ आये हैं।1।

ज़माने में हमें इतना सताया है गरीबी ने।
भरोसे में यहाँ किस्मत शहर से जोड़ आये हैं।2।

पड़े फुटपाथ पर आके नहीं कोई सहारा अब।
वहाँ तो जोश में हम झोंपड़ी को फोड़ आये हैं।3।

सहा है कष्ट कितना अब कहाँ किसको बताऊँगा।
अकेली गाँव में मजबूर माँ को छोड़ आये हैं।4।

बड़ी मुश्किल हुई है अब समझ कुछ भी नहीं आता।
हुये हैं आधुनिक हम अजनबी की होड़ आये हैं।5।

गज़ल

अगर में हूँ नदी गहरी मिरी कल कल पिताजी हैं।
ग़मों में साथ मेरे हैं सदा वो पल पिताजी हैं।

दिखाते हैं सभी को रौब सबको वो डरा देते।
दिखें वो सख्त पर अन्दर बड़े कोमल पिताजी हैं।

सताता है बहुत बच्चा मगर वो कुछ नहीं कहते।
दिलों में ही छुपा लेते सदा हलचल पिताजी हैं।

कभी मुझको हँसाते हैं कभी मुझको रुला देते।
बड़े गम्भीर होकर भी कभी चंचल पिताजी हैं।

बड़ा खुश "अजनबी" दिखता सदा उनकी दुआओं से।
जमीं माँ है अगर मेरी यहाँ बादल पिताजी हैं।

माँ प्रभु जी की कृपादृष्टि है

माँ विचार है माँ जीवन है।
सकल विश्व का अपनापन है।
जग के सारे रिश्तों में से।
यह रिश्ता सबसे पावन है।

जग की जननी भाग्य विधाता।
प्रथम पूज्य हैं सबकी माता।
रक्त कोख में अपना देती।
माँ होती है जीवन दाता।

माँ ममता की मूरत होती।
परमेश्वर की सूरत होती।
नारी रूप बहुत से जीती।
माँ सबसे खुबसूरत होती।

धूप लगे तो छाँव बने माँ।
थकते हम तो पाँव बने माँ।
शहरी होती इस दुनिया में।
हरियाली का गाँव बने माँ।

सदा दुखों में ढाल बने माँ।
नये सुखों का साल बने माँ।
दुश्मन गर जो आँख उठाये।
उसका तो फिर काल बने माँ।

प्रभु निर्मित यह सकल सृष्टि है।
माँ प्रभु की ही दिव्य द्रष्टि है।
मात रूप प्रभु स्वंम विराजे।
माँ प्रभु जी की कृपादृष्टि है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

मैं अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा किये जा रहे इस नव प्रयास का पूर्ण समर्थन करते हुये। इसकी संस्थापिका आदरणीया डॉ. प्रीति सुराना जी की सोच को नमन करता हूँ। यह मेरा स्वयं का किया गया अनुभव आधारित विचार है, की सृजनात्मकता किसी भी प्रकार की नकारात्मक्ता से आपको दूर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बशर्ते आप उसका इस कोरोना काल जैसे आपातकालीन परिस्तिथियों में जिस भी सृजनात्मक कार्य में आपकी रुचि हो उसमें अपने आप को सतत रूप से सक्रिय बनाये रखें।

अगर आप लेखक है तो लेख लिखने कहानी या उपन्यास के नये विषय को खोजने और उसका विस्तार करने की दिशा में कार्य करें कवि हैं तो कविता और उसके कवित्त ज्ञान को बढ़ाएँ नया सृजन करें। चित्रकारों के लिये तो आपातकाल जैसी एकाग्रता कहीं अन्यन्त्र उपलब्ध ही नहीं हो सकती। गायक को गायन का अभ्यास और नृतक अपने नृत्य की सृजनात्मकता को और अधिक निखार सकते हैं।

यह हमारा सौभाग्य है की परमपिता परमात्मा ने हमको अन्य लोगों से भिन्न बनाया है। और सृजनशीलता के रूप में एक ऐसा हथियार दिया है जो हमको इस तरह के आपातकाल से लड़ने की अतिरिक्त शक्ति प्रदान करता है।

इस आपातकालीन समय में लोगों को उनकी सृजनात्मकता का उपयोग करवा कर १६-१६ रचनाओं के प्रकाशन का जो प्रयास अंतरा शब्द शक्ति द्वारा किया जा रहा है।

वह अत्यंत सराहनीय है।

रचनाकार

आदित्य राजौरिया 'अजनबी'

S/O डॉ.मदनमोहन राजौरिया
तिवारी फार्म रोड, महावीर पुरा
जवाहरगंज, डबरा,
जिला ग्वालियर-४७५११०

Email- rajoriaaditya31@gmail.com
07869685009 (कॉल ऐंड वॉट्सएप्प)
08770587172 (केवल कॉल)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-204-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/